(५) मात ताहि सेवके...

माता तोहि सेवके, सुतृप्ता हमें भई;
राग–द्वेष टार, वीतराग बुद्धि परिणई;
तू ही लोकमांहि श्रेष्ठ, भायी सुभाग है...
इन्द्र तोरी भक्ति में, प्रवीण किये राग हैं... ॥ 1 ॥